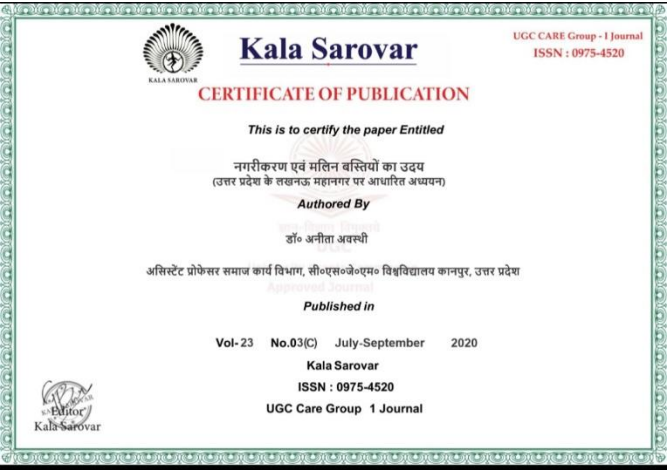

Kala Sarovar

UGC CARE Group - I Journal
ISSN : 0975-4520

CERTIFICATE OF PUBLICATION

This is to certify the paper Entitled

नगरीकरण एवं मलिन बस्तियों का उदय
(उत्तर प्रदेश के लखनऊ महानगर पर आधारित अध्ययन)

Authored By

डॉ० अनीता अवस्थी

असिस्टेंट प्रोफेसर समाज कार्य विभाग, सी०एस०जे०एम० विश्वविद्यालय कानपुर, उत्तर प्रदेश

Published in

Vol- 23 No.03(C) July-September 2020

Kala Sarovar

ISSN : 0975-4520

UGC Care Group 1 Journal

Editor
Kala Sarovar

ISSN: 0975-4520
Vol-23 No.03(C) July-September 2020

नगरीकरण एवं मलिन बस्तियों का उदय
(उत्तर प्रदेश के लखनऊ महानगर पर आधारित अध्ययन)

डॉ0 अनीता अवस्थी[1], डॉ0 संदीप कुमार सिंह[2]

1. असिस्टेंट प्रोफेसर, समाज कार्य विभाग, सी0एस0जे0एम0 विश्वविद्यालय कानपुर, उत्तर प्रदेश
2. एसोसिएट प्रोफेसर, सतत् शिक्षा एवं प्रसार विभाग, सी0एस0जे0एम0 विश्वविद्यालय कानपुर, उत्तर प्रदेश

ई-मेल: drsandeepsw@gmail.com, मोबाईल: 9415464292

सारांश

वर्तमान उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ एक जटिल नगर के रूप में पिछले दो दशकों से परिवर्तित होने लगा। हालांकि अवध की नवाबी के काल में इसका नगरीकरण सीमित व परम्परागत प्रकार का था। चौक-वजीरगंज, कैसरबाग, अमीनाबाद का क्षेत्र ही मुख्य रूप से उच्च घरानों एवं बड़े बाजारों का क्षेत्र था जबकि चारबाग, आलमबाग, कैंट, अलीगंज मूसाबाग जैसे क्षेत्र द्वैतीयक आबादी से युक्त थे। लखनऊ नगर का यह खाका अवध शासक के ब्रिटिश आधीन होते ही बदलने लगा आँग्ल प्रशासकों ने नये शक्ति केन्द्रों की स्थापना विशेष रूप से द्वैतीयक क्षेत्रों में की ताकि अवध की स्थानीय घनी आबादी वाले नगर क्षेत्र पर अधिक कुशलता व क्षमता के साथ नियन्त्रण रखा जा सके। लामार्टीनियर, कैन्टोनमैन्ट क्षेत्र, हजरतगंज चारबाग, आलमबाग जैसे क्षेत्रों का विकास होने लगा। विशेष रूप से 1920-21 में लखनऊ विश्वविद्यालय, 1921 में विधान परिषद् एवं 1935 में प्रान्तीय सचिवालय की स्थापना के साथ लखनऊ नगर एक राजधानी के रूप में उपयुक्त क्षेत्र साबित हुआ। आबादी सीमित थी, विस्तार की तमाम सम्भावनाएं थीं, नई-नई इमारतें एवं बेहतर सम्पर्क सुविधाओं के कारण लखनऊ नगर आजादी के पूर्व संयुक्त प्रान्त की राजधानी बनी थी। तथा आजादी के पश्चात् भी आज तक उत्तर प्रदेश प्रान्त राजधानी है।

संकेत शब्द

नवाबी, राजधानी, नगरीकरण, परम्परागत, मलिन बस्तियाँ, औद्योगिक क्रांति, प्रशासक, अस्वास्थ्यकर दशाएं, संयुक्त प्रान्त, कुशलता ।

प्रस्तावना

आजादी के बाद लखनऊ नगर क्षेत्र के नगरीकरण में लगातार वृद्धि होती चली गयी यह वृद्धि नगर के विस्तार के रूप में दिखती है साथ ही नगर की जनसंख्या के अत्याधिक बढ़ने के रूप में भी दिखती है। लखनऊ नगर क्षेत्र का आज विस्तार देखने के लिये यदि नगर क्षेत्र के मानचित्र पर नजर दौड़ाएँ तो पायेंगे कि यदि नगर क्षेत्र का केन्द्रीय व्यवसायिक क्षेत्र अमीनाबाद माना जाये तो नगर क्षेत्र का पूर्व दिशा में विस्तार गोमती नगर व चिनहट तक है, पश्चिम में विस्तार राजाजीपुरम् तक है, उत्तर में इंजीनियरिंग कॉलेज व विश्वविद्यालय के द्वितीय परिसर के आगे तक हैं, दक्षिण में अमौसी, सरोजनी नगर, साऊथ सिटी व पी०जी०आई० तक है। यह समस्त क्षेत्र 1991 से 79 वर्ग किलोमीटर था। परन्तु वर्तमान समय में अनुमानतः 100 वर्ग किलोमीटर है। लखनऊ नगर भौतिक रूप से वृद्धि कर रहा है। साथ ही इसका